डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part-1
General & Subsidiary
HINDI

Date-01-02-2023

विद्यापति के पद (1)

नन्दक नंदन कदम्बक तरू तर,
धिरे-धिरे मुरलि बजाब।
समय संकेत निकेतन बइसल,
बेरि-बेरि बोलि पठाव॥
सामरि, तोहरा लागि अनुखन विकल मुरारि।
जमुनाक तिर उपवन उदवेगल,
फिरि तनहि निहारि॥
गोरस बेचरा अबइत जाइत,
जनि-जनि पुछ बनमारि।
तोंहे मतिमान, सुमति मधुसूदन,
वचन सुनह किछु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति,
बन्दह नन्द किसोरा॥

संदर्भ:-

प्रस्तुत पंक्तियों का मूल आधार 'विद्यापति पदावली' है। जिसकी रचना आदिकाल के कवि विद्यापति ने किया था। विद्यापति की पदावली भक्ति और शृंगार रस से सराबोर है। यह पद श्रीकृष्ण की वंदना का है। इस पद का प्रसंग कुछ यूँ है कि श्रीकृष्ण पूर्व निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर पहुँच गए हैं, परंतु राधा वहाँ नहीं पहुँची है। कृष्ण की व्याकुलता का वर्णन राधा की सखी करती है।

व्याख्या :-

हे राधा! नंद के पुत्र श्रीकृष्ण कदम्ब वृक्ष के नीचे आ गए हैं और धीरे-धीरे मुरली बजा रहे हैं। वे पूर्व निश्चित मिलन स्थान पर, निर्धारित समयानुसार पहुँच गए हैं। बार-बार मुरली बजाकर, मुरली के स्वर में तुम्हारा नाम लेकर तुम्हें बुला रहे हैं।

हे श्यामा! मुरारी (श्रीकृष्ण) तुम्हारे लिए पल-प्रतिपल व्याकुल हो रहे हैं। वे यमुना के तट पर उस उपवन में अति व्यग्र होकर उसी ओर देख रहे हैं जिस ओर से तुम्हारे आने की सम्भावना है। गोरस बेचने वाली अर्थात् दूध-दही बेचने आने-जाने वाली प्रत्येक स्त्री से तुम्हारे बारे में पूछ रहे हैं।

हे राधा! तुम मेरी बात पर थोड़ा भी ध्यान दो। तुम स्वयं भी बुद्धिमती हो और माधव भी सुंदर बुद्धि वाले हैं, अर्थात् तुम दोनों ही समान रूप से बुद्धि सम्पन्न हो। इस कारण तुम दोनों में परस्पर अनुराग का होना स्वाभाविक ही है।

विद्यापति कहते हैं कि हे रमणियों में श्रेष्ठ राधा! मेरी बात पर ध्यान दो। नंद किशोर की वंदना करो और वहाँ उनसे मिलकर उन्हें प्रसन्न करो।

विशेष :-

(1.) भाषा - मैथिली

(2.) अलंकार —

(क) यमक अलंकार — 'नंदक नंदन'।

(ख) पुनरूक्ति अलंकार — 'बेरि-बेरि', 'फिरि-फिरि', 'जनि-जनि'।

(ग) छेकानुप्रास — 'तरू-तरू' में 'त', 'समय-संकेत' में 'स' और 'उपवन उदबेगल' में 'उ' अक्षर की आवृति होने से छेकानुप्रास है।